Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ श्री नरसिंह जी अवतार कथा ॥

भक्त प्रह्लाद और भगवान नरसिंह

पौराणिक कथा का सरल हिंदी पुनर्कथन

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ श्री नरसिंह जी अवतार कथा ॥

श्रीमद्भागवत के सप्तम स्कंध के प्रसंग पर आधारित

॥ हिरण्यकशिपु का अभिमान ॥

पौराणिक कथा के अनुसार हिरण्यकशिपु अत्यंत शक्तिशाली दैत्यराज था। उसका भाई हिरण्याक्ष भगवान विष्णु के वराह अवतार द्वारा मारा गया था। इस कारण वह विष्णु से द्वेष रखता था। अपनी शक्ति को अजेय बनाने के लिए उसने कठोर तपस्या की और ब्रह्मा जी से ऐसे वर माँगे जिनसे उसे लगा कि मृत्यु उसके निकट नहीं आ सकेगी।

॥ वरदान से उपजा अहंकार ॥

उसने चाहा कि उसकी मृत्यु न घर के भीतर हो, न बाहर; न दिन में, न रात में; न धरती पर, न आकाश में; न मनुष्य द्वारा, न पशु द्वारा और न किसी अस्त्र-शस्त्र से। वर पाकर वह अभिमान में भर गया। उसने अपने अधिकार को सबसे ऊपर मान लिया और चाहता था कि सभी उसी की आज्ञा तथा पूजा स्वीकार करें।

॥ श्री नरसिंह जी अवतार कथा ॥

॥ बालक प्रह्लाद की भक्ति ॥

इसी हिरण्यकशिपु का पुत्र प्रह्लाद बचपन से भगवान विष्णु का भक्त था। उसे राज्य, वैभव और पिता की प्रशंसा से अधिक हरि-स्मरण प्रिय था। शिक्षकों के समझाने पर भी उसका मन भक्ति से नहीं हटता था। वह अपने साथियों को भी सिखाता था कि जीवन का सच्चा आश्रय भगवान हैं और सभी के प्रति मैत्री तथा करुणा का भाव रखना चाहिए।

॥ विपत्ति में अटल विश्वास ॥

पुत्र की विष्णु-भक्ति देखकर हिरण्यकशिपु क्रोधित हो उठा। उसने प्रह्लाद को अनेक कष्ट दिए और उसे अपनी बात मनवाने का प्रयास किया। किंतु प्रह्लाद ने भक्ति नहीं छोड़ी। वह पिता से द्वेष नहीं करता था; उसके मन में भगवान के प्रति भरोसा और सबके लिए मंगल की भावना बनी रही। भक्त और अभिमानी राजा के बीच यही अंतर इस कथा का केंद्र है।

॥ श्री नरसिंह जी अवतार कथा ॥

॥ क्या तुम्हारे भगवान इस खम्भे में हैं? ॥

एक दिन हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद से पूछा कि वह किसके बल पर उसकी आज्ञा नहीं मानता। प्रह्लाद ने विनम्रता से कहा कि सबको शक्ति देने वाले भगवान ही उसका भी आश्रय हैं। पिता ने क्रोध में पूछा कि यदि भगवान हर जगह हैं, तो क्या वे सामने खड़े खम्भे में भी हैं? प्रह्लाद का विश्वास था कि भगवान सर्वत्र विद्यमान हैं।

॥ अद्भुत नरसिंह स्वरूप का प्राकट्य ॥

हिरण्यकशिपु ने खम्भे पर प्रहार किया। उसी समय एक प्रचंड ध्वनि गूँजी और भगवान विष्णु नरसिंह रूप में प्रकट हुए। उनका स्वरूप अद्भुत था: मुख सिंह का और देह मनुष्य जैसी। वे पूर्ण मनुष्य भी नहीं थे और साधारण पशु भी नहीं। भगवान के इस प्राकट्य ने प्रह्लाद के विश्वास को सत्य किया और हिरण्यकशिपु के अहंकार को चुनौती दी।

॥ श्री नरसिंह जी अवतार कथा ॥

॥ अधर्म का अंत ॥

हिरण्यकशिपु ने भगवान नरसिंह से युद्ध किया। अंततः संध्या के समय भगवान ने उसे पकड़कर द्वार की देहरी पर अपनी जाँघों पर रखा और नखों से उसका वध किया। इस प्रकार ब्रह्मा जी के वर की मर्यादा भी बनी रही और अधर्म का अंत भी हुआ। दैत्यराज ने जिन शर्तों को अजेय सुरक्षा समझा था, वे ईश्वर की शक्ति को सीमित नहीं कर सकीं।

॥ वरदान की मर्यादा कैसे बनी रही? ॥

संध्या का समय : न दिन, न रात।
द्वार की देहरी : न घर के भीतर, न बाहर।
भगवान की जाँघों पर : न धरती पर, न आकाश में।
नरसिंह स्वरूप : न केवल मनुष्य, न केवल पशु।
अपने नखों से : किसी बने हुए अस्त्र-शस्त्र से नहीं।

॥ श्री नरसिंह जी अवतार कथा ॥

॥ भक्त के प्रति भगवान की करुणा ॥

हिरण्यकशिपु के वध के बाद देवताओं ने भगवान की स्तुति की। ब्रह्मा जी के कहने पर प्रह्लाद आगे बढ़ा और चरणों में प्रणाम किया। भगवान ने स्नेहपूर्वक उसके सिर पर हाथ रखा। प्रह्लाद ने अपनी भक्ति को धन या पद पाने का साधन नहीं बनाया। उसने निर्मल भक्ति की कामना की और अपने पिता के कल्याण के लिए भी प्रार्थना की।

॥ कथा का संदेश ॥

भगवान की आज्ञा से प्रह्लाद ने राज्य का दायित्व सँभाला। यह कथा भक्ति के साथ विनय, साहस और करुणा का संदेश देती है। शक्ति का उपयोग अत्याचार के लिए करने वाला अभिमान अंततः नष्ट होता है। प्रह्लाद की भक्ति हमें सिखाती है कि कठिन परिस्थितियों में भी सत्य का साथ, सद्भाव और अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा बनाए रखें।

प्रह्लाद-पालक भगवान नरसिंह को कोटि-कोटि प्रणाम।
॥ जय श्री नरसिंह ॥